शिक्षिका : शोध में भागीदार, उपभोक्ता तथा शोधकर्ता

टी. एस. सरस्वती

प्रस्तुत लेख शोध से प्राप्त जानकारी का उपभोक्ता होने के अलावा, स्वयं शोधकर्ता के रूप में तथा अन्य लोगों के शोधकार्य में भागीदार के रूप में शिक्षिका की भूमिका के महत्त्व पर प्रकाश डालता है। हम शुरुआत उन कारणों में से कुछ पर नजर डालने से करेंगे जिनकी वजह से लोग प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखरेख तथा शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) के क्षेत्र में शोध करते हैं। ई.सी.सी.ई. में किया गया शोध, चाहे वह बड़े पैमाने पर किया गया हो या छोटे पैमाने पर, कई उद्देश्यों की पूर्ति करता है :

1. व्यक्ति की इस बारे में समझ को बेहतर बनाता है कि बच्चे कैसे सीखते हैं, बच्चे कैसे बड़े होते हैं, कैसे घर और स्कूल में बच्चों के प्रारम्भिक अनुभव उनके बड़े होने और (शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा बौद्धिक) विकास में मदद करते हैं या रुकावट बनते हैं।
2. प्राप्त जानकारी सांस्कृतिक दृष्टि से प्रासंगिक ज्ञान के आधार को निर्मित करने में सहायक होती है। इस जानकारी का उपयोग अन्य लोग व्यावहारिक कार्यों, पैरवी करने तथा नीति के विकास के लिए कर सकते हैं।
3. प्रारम्भिक शिक्षा के परिवेशों में अच्छे प्रचलनों के बारे में, और, अथवा छोटे बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने के लक्ष्य वाले सुधार कार्यक्रमों की सफलता तथा असफलता के बारे में साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
4. शोध प्रारम्भिक शिक्षा से सम्बन्धित उपयोगी नीतियाँ विकसित करने के लिए भी साक्ष्यों का सहयोग प्रदान कर सकता है।

ई.सी.सी.ई. में शोध मोटे तौर पर तीन स्तरों अर्थात बृहत, मध्यम तथा सूक्ष्म स्तरों के अन्तर्गत आता है। परिभाषा के अनुसार बृहत् स्तर का शोध अकसर पूरी आबादी को समाहित करते हुए बड़े पैमाने पर होता है, जैसे कि छह साल से कम उम्र वाले सभी पूर्व–स्कूल जाने वाले (या न जाने वाले) बच्चों की गणना करना। राज्यों के या पूरे देश के स्तर पर शिक्षकों की उपलब्धता, शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताओं, पूर्व–स्कूलों में बुनियादी (अधोसंरचना) सुविधाओं के बारे में किए जाने वाले बड़े पैमाने के सर्वेक्षण भी इसी समूह के अन्तर्गत आते हैं। एन.एस.एस.ओ., ए.एस.ई.आर., प्रथम, एजुकेशनल इनीशिएटिव्स आदि संस्थाओं के द्वारा किए जाने वाले सभी सर्वेक्षण बृहत् स्तर के शोध होते हैं। ये शिक्षा तक पहुँच, उपलब्धता, कमियों इत्यादि का मानचित्रण करने में उपयोगी होते हैं।

चित्र 1. एक बहु–आयामी कार्यसूची – प्रारम्भिक वर्षों में देखरेख तथा शिक्षा पर शोध

मध्यम स्तर के शोध आमतौर पर एक बड़े और प्रतिनिधिक नमूने का उपयोग करते हैं ताकि प्राप्त जानकारियों का सामान्यीकरण किया जा सके। अनेक स्थानों (संस्थाओं, राज्यों, भौगोलिक स्थलों) पर किए जाने वाले अध्ययन भी मध्यम स्तर के अन्तर्गत आते हैं। ऐसे अध्ययन जिनका लक्ष्य औजारों (मापने के उपकरणों) का मानकीकरण करना होता है, ताकि वे बड़े नमूनों के साथ उपयोग किए जा सकें, अकसर इसी स्तर के होते हैं। सूक्ष्म स्तर के शोध का आशय

छोटे पैमाने पर गहराई से किए गए ऐसे अध्ययनों से होता है जो किसी नए विचार की जाँच–पड़ताल करने में तथा किसी विशेष नमूने की विशेषताओं का वर्णन करने में सहायता करते हैं, या प्रायोगिक अध्ययनों से जो किसी दी गई परिकल्पना का परीक्षण करते हैं।

बृहत तथा मध्यम स्तर के शोधों में उत्तरदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका

शोधकर्ता की तरह शिक्षिका, जो इस लेख का मुख्य विषय है, की बात करने से पहले हम पहले दो स्तरों, अर्थात बृहत् तथा मध्यम स्तरों, के शोध में उत्तरदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका का बहुत संक्षिप्त उल्लेख करेंगे। ई.सी.सी.ई. के क्षेत्र में किए जाने वाले सभी शोधों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शिक्षिका की भागीदारी आवश्यक होती है। चूँकि शिक्षिकाओं के उत्तर उनके स्वयं के भागीदारी अनुभव को प्रतिबिम्बित करते हैं, इसलिए वे कक्षा के कामकाज के प्रचलनों, सुधार कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की खामियों, और नीतियों के विकास के लिए मिलने वाली सीखों आदि की गतिकी को समझने के लिए मूल्यवान होते हैं। जो शोधकर्ता जानकारी इकट्ठी करते हैं वे केवल कार्यक्रमों और कामकाज के वास्तविक प्रचलनों के बीच में मध्यस्थों की भूमिका में होते हैं। शिक्षिकाएँ ही वे व्यक्ति होती हैं जो जोड़ने वाली आवश्यक कड़ी तथा जानकारी प्रदान करती हैं, इसलिए उनके सहयोग का अतिशय महत्त्व होता है।

शोधकर्ता के रूप में शिक्षिका

इस खण्ड में हम एक ऐसी सक्रिय शोधकर्ता के रूप में शिक्षिका के महत्त्व की बात करेंगे जो सवाल उठाती है, प्रासंगिक जानकारी इकट्ठी करती है और उत्तरों की खोज करने के लिए उस जानकारी का विश्लेषण करती है, ताकि फिर कक्षा के परिवेश में, या बच्चों तथा उनके माता–पिताओं के साथ होने वाले उसके क्रियाकलाप में उन उत्तरों का उपयोग किया जा सके।

हमने पहले उल्लेख किया था कि शोध व्यक्ति के प्रश्नों के उत्तरों की व्यवस्थित खोज करना होता है, जो किसी भी चुने गए कार्यक्षेत्र में ज्ञान के आधार को पुष्ट बनाता है। जानकारी के इस कोश के स्वामी के लिए यह ज्ञान उपयोगी होना चाहिए। इस दृष्टि से शिक्षिका बच्चों के बहुत नजदीक और एक लाभप्रद स्थिति में होती है। उसके प्रश्नों का सम्बन्ध, बच्चे कैसे सीखते हैं, क्या चीज उनको प्रेरित करती है, क्यों कुछ बच्चों को सीखने में मजा आता है और कुछ को नहीं आता और ऐसे ही अन्य सवालों से होता है। उसके शोध के केन्द्रीय पात्र वे विद्यार्थी होते हैं जिनके साथ वह प्रतिदिन काम करती है और उसे जो उत्तर प्राप्त होते हैं वे उसकी देखरेख में दिए गए बच्चों की मदद करने में उपयोगी होते हैं। साथ ही साथ यह उसकी सक्षमता की अनुभूति को पुष्ट करता है और शिक्षिका के रूप में उसे सशक्त बनाता है, क्योंकि उसने प्रत्यक्ष साक्ष्यों के आधार पर समाधानों को खोज लिया होता है। वह अपनी क्रियाशीलता में शोधकर्ता है। और वह जिस क्षेत्र में निपुण है वही सक्रिय शोध है।

अब हम प्रारम्भिक शिक्षा के परिवेश में सक्रिय शोध के कुछ उदाहरणों को देखेंगे:

उदाहरण 1. शिक्षिका देखती है कि गीत–गायन के समय में तीन या चार बच्चे समूह में चुपचाप बैठे हुए अन्य बच्चों को गाता हुआ देख रहे हैं। कुछ दिन तक व्यवस्थित निरीक्षण (शोध की रणनीति) के बाद वह उन बच्चों को गायन के समय अपने पास बिठाने का निर्णय लेती है। उनको गाने के लिए प्रोत्साहित करती है तथा गीत के शब्दों में जहाँ आवश्यक हो वह उनकी मदद करती है (सुधार का नियोजित प्रयास)। यदि बच्चे संकोच छोड़कर खुल जाते हैं और अन्यत्र बिठाए जाने पर भी गाना जारी रखते हैं (निरीक्षण), तो शिक्षिका को प्रमाण मिल जाता है कि उसका सुधार–प्रयास (प्रयोग) कारगर हुआ।

उदाहरण 2. शिक्षिका देखती है कि संख्या कौशल (न्यूमरेसी) को बढ़ावा देने वाले सामूहिक अभ्यास के दौरान, कुछ बच्चे आगे–आगे चलते हैं और दिए गए काम पूरा कर लेते हैं, जबकि अन्य निष्क्रिय दर्शक बने रहते हैं। शिक्षिका समूह को जोड़ों में बाँटने का निर्णय लेती है। वह सवालों को इस ढंग से रचती है कि उन्हें सहयोगात्मक तरीके से हल करना आवश्यक हो। यदि कुछ सप्ताह बाद शिक्षिका को पता चलता है कि सामूहिक सीखने की तुलना में ऐसे जोड़े बनाने के परिणामस्वरूप संख्या कौशल में बच्चे बेहतर अंक हासिल करते हैं (और शायद कक्षा में शोर भी अधिक होता है), तो शिक्षिका के भीतर की शोधकर्ता ने फिर एक बार अपने इस प्रश्न, कि "मैं बच्चों की संख्या कौशल सीखने में कैसे मदद कर सकती हूँ?", का व्यवस्थित उत्तर खोज लिया होता है।

उदाहरण 3. शिक्षिका गौर करती है कि मासिक बैठकों में माताओं–पिताओं की भागीदारी बहुत कम है। वह अनुमान लगाती है कि बच्चे के माध्यम से माता–पिता को मौखिक या लिखित सन्देश भेजना काफी नहीं है। वह बच्चों के घरों में जाकर निमंत्रण को निजी बनाने का और माता–पिता से मुलाकातों के दौरान (यह सुनिश्चित करते हुए कि वहाँ उनके पड़ोसी भी उपस्थित हों) उनको कोई जिम्मेदारियाँ लेने को विवश करके उनमें बच्चे की शिक्षा के प्रति स्वामित्व का बोध विकसित करने का निर्णय लेती है। घरों के इन दौरों के अवसर का वह अन्य जानकारी इकट्ठी करने के लिए या बच्चे की प्रगति की चर्चा करने के लिए उपयोग करती है। जहाँ सम्भव हो वहाँ बैठक से पिछली शाम को माता–पिता को याद दिलाने के लिए मोबाइल फोन का उपयोग किया जाता है। यदि अगली तथा बाद की बैठकों में पालकों की उपस्थिति में सुधार होता है, और वह उत्साहवर्धक है, तो शिक्षिका ने इस बारे में, कि क्या चीज काम करती है और कैसे, अपने ज्ञान कोश में एक और उपयोगी बात जोड़ ली है। एक बार फिर, यह ज्ञान सिखाने–सीखने के परिवेश में उठने वाले वास्तविक जीवन के प्रश्नों के उत्तरों की व्यवस्थित खोज पर आधारित है।

हम इस सिलसिले को जारी रखते हुए मार्गदर्शक के रूप में शिक्षिका, एक साथ सीखने वाली तथा शोधकर्ता की साझी भूमिकाओं में शिक्षिका (अवलोकन करती हुई, सुधार के प्रयास करती हुई, प्रयोग करती हुई, अनुमानित धारणाओं का परीक्षण करती हुई, और, सबसे बड़ी बात, ज्ञान का ऐसा भण्डार निर्मित करती हुई जो उसका अपना है!) के उदाहरण दे सकते हैं। निश्चित रूप से इस पूरी कवायद को ध्यान देने योग्य बनाने के लिए, प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित रूप से दर्ज करने का प्रयास शिक्षिका को और भी सशक्त बनाता है। समान सोच वाली शिक्षिकाओं (जो मिलते–जुलते अनुभवों, कक्षा के कामकाज की विधियों, बच्चों, पालकों तथा समुदायों के

साथ काम करती हैं) के साथ जुड़ने से इसमें मदद मिलेगी। ऐसे सहयोगी दलों में शिक्षिकाएँ विभिन्न स्थितियों में उनके सामने आने वाली एक जैसी समस्याओं या चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करती हैं और एक–दूसरे को प्रेरित करती हैं। इस तरह प्राप्त जानकारियों को सामूहिक बैठकों में साझा करने का अनुभव और भी उत्पादक होता है क्योंकि वह स्वयं के तथा अपनी साथियों के, व्यक्तित्व को सशक्त बनाता है।

उच्च शिक्षा के संस्थानों में कार्यरत अकादमिक विद्वानों का शोध पर विशेषाधिकार नहीं होता। हम हर बच्चे के एक जिज्ञासु वैज्ञानिक होने की बात करते हैं। क्या शिक्षिका की स्थिति इन छोटे वैज्ञानिकों में पूछताछ की भावना का पोषण करने के लिए, और वे कैसे सीखते और बड़े होते हैं, यह समझने के लिए, विशेष रूप से सुविधाजनक नहीं होती? इससे भी बड़ी बात यह है कि शोध करने का अनुभव आत्मिक सन्तोष तथा परिपूर्णता की अनुभूति देता है क्योंकि यह शिक्षिका को कक्षा में आने वाली प्रत्येक समस्या को (जिसे वह समस्या की तरह न देखकर चुनौती की तरह देखती है और उसका समाधान खोजती है) पहचानने और उसका हल निकालने में सक्षम बनाता है। इसलिए यह वांछनीय है कि शिक्षिका को स्वयं शोधकर्ता के रूप में और अधिक शक्ति मिले!

टी. एस. सरस्वती वर्तमान में एक स्वतंत्र बाल विकास परामर्शदाता हैं। वे पहले एम. एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा के डिपार्टमेंट ऑफ ह्यूमन डेवेलपमेंट एण्ड फेमिली स्टडीज (मानवीय विकास तथा पारिवारिक अध्ययन विभाग) में प्रोफेसर तथा अध्यक्ष थीं। उनसे saraswathi.1939@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सत्येन्द्र त्रिपाठी